मूल्य 1 रूपया

कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

कृषक समाचार की 32,000 प्रतियां सन् 1960 से हर महीने छापकर सदस्यों को भेजी जाती हैं

वर्ष 64 | जून, 2019 | अंक 6 | कुल पृष्ठ 8

सभापति का पत्र :

ग्रामीण अर्थव्सवस्था में आने वाले संकटों और भारत के नियंत्रण से परे कारकों, को देखते हुए, अब समय लोकलुभावन अपरिवर्तनीय (पीएम किसान, फार्म ऋण माफी, न्याय) पर व्यापार–नापसंद के सर्वश्रेष्ठ संयोजन में से प्राथमिकता देने का है।

इसी समय, सरकार के कई कार्यक्रमों को बस आश्रय देने की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, 100 स्मार्ट शहरों की अवधारणा 6,000 स्मार्ट जनगणना शहरों (5,000 से अधिक जनसंख्या) को विकसित करने प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। यहां तक कि एक नौसिखिए ने लाखों मेगापोलिज को लाखों आकर्षित करने के बजाय आंतिरिक इलाके को विकसित करने की सलहा दी होगी।

बदले हुए पश्चिमी विकास मॉडल की नकल करने के बजाय, समय पर बाजार खुफिया सेवाएं प्रदान करने के लिए यूएस कृषि विभाग (यूएसडीए) जैसे संस्थानों की स्थापना करने का प्रयास करना बेहतर है। 'राष्ट्रीय रूप से सुसंगत डेटाबेस' को प्राथमिकता देना, बेहतर पारदर्शिता, पारगम्यता, शासन, नीतियों और कार्यान्वयन के लिए प्रमुख चालक होगा।

कई कारणों से दूसरों की तुलना में अधिक संकट में डेयरी उद्योग, नई सरकार के लिए साहसिक निर्णय लेने का समय है। सरकार को दूध के लिए न्यूनतम खरीद मूल्य 30 रूपये प्रति लीटर घोषित करना चाहिए।

यदि ऐसा नहीं किया जाता है, तो भारत दूध का शुद्ध आयातक बन सकता है और लोगों की आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन खो दिया जा रहा है, जिससे लोगों को घरेलू बलों पर अधिक लाभ हो रहा है।

निर्विवाद तथ्य यह है कि किसानों को सदा के लिए समर्थन देने की आवश्यकता होगी; हमें

समर्थन प्रणालियों को डिजाइन करने में सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि न तो हमारे पास समय है और न ही हमारी समस्याओं को राजनीतिक दलों द्वारा पेश किए जाने वाले आसान समाधान हैं। बदलाव एक वैधानिक कमीशन किसान आयोग की ओर से हो सकता है, जिसके पास मौजूदा हस्तक्षेपों की समीक्षा करने और ग्रामीण आजीविका में सुधार के लिए नई पहल करने के लिए एक किसान की अध्यक्षता है।

समन्वय और सुपुर्दगी के लिए, आदर्श रूप से आयोग में एक पूर्णकालिक सदस्य सचिव और कृषि सचिव एक आधिकारिक सदस्य के रूप में एक आईएएस अधिकारी शामिल होना चाहिए।

अंत में, चुनावों की गर्मी और पीस खत्म होने के बाद, भारत को महत्वपूर्ण मंत्रालयों के प्रमुख चिकित्सकों के साथ एक राष्ट्रीय सरकार की आवश्यकता है। पेशेवर राजनेताओं और आर्मचेयर विशेषज्ञों के लिए समय है कि वे एक तरफ कदम बढाएँ और हमारी पीड़ा को रोकें।

– अजय वीर जाखड़

अध्यक्ष, भारत कृषक समाज

@ajayvirjakhar

o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o

पद्मश्री पुरस्कार 2019 जीतने वाले किसान

श्री जगदीश पारिक

राजस्थान के किसान को मिला 'पद्मश्री', जैविक खेती में कायम की मिसाल

सीकर जिले के अजीतगढ़ के धरतीपुत्र जगदीश पारिक को पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया है। जगदीश पारिक को पद्मश्री का पुरस्कार उनके जैविक खेती में किए जाने वाले नवाचारों के लिए नवाजा गया है। जगदीश पारिक मूल रूप से अजीतगढ़ कस्बे के रहने वाले हैं।

71 वर्षीय जगदीश सब्जियों की नई किस्म तैयार कर किसानों को मुहैया कराते रहते हैं साथ ही जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए नवाचार करते रहते हैं।

आज के दौर में सभी जगह कीटनाशकों का बोलबाला है तथा खान–पान की चीजें भी इससे अछूती नहीं रह पाई हैं। बाजार में बिना कीटनाशकों का प्रयोग किए कोई खाद्य सामग्री सुगमता से उपलब्ध नहीं है और अगर कहीं उपलब्ध भी है तो उसकी कीमत इतनी अधिक है कि वह आमजन की पहुंच से कोसों दूर हैं।

लोगों की इसी परेशानी को देखते हुए श्रीमाधोपुर उपखंड के अजीतगढ़ निवासी जगदीश प्रसाद पारिक ने जैविक खेती की ओर रूख किया।

किसान से कृषि वैज्ञानिक

जगदीश पारिक एक किसान हैं परन्तु खेती में नए–नए प्रयोग करके इन्होंने किसान वैज्ञानिक का दर्जा प्राप्त कर लिया है। नियमित नवाचार तथा कीटनाशक मुक्त खेती की वजह से इन्होंने अपना तथा अपने क्षेत्र का नाम देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी रोशन किया है। जगदीश पारिक निरंतर सब्जियों की नई किस्म विकसित करने में लगे रहते हैं।

जैविक खेती के जरिए अच्छी गुणवत्ता, कीटरोधी तथा सामान्य से काफी बड़े आकार की सब्जियां पैदा करके इन्होंने आधुनिक समय में व्याप्त उस मिथ्या भ्रान्ति को तोड़ा है जिसमें यह माना जाता है कि आज के समय में बिना कीटनाशकों के प्रयोग के अधिक तथा गुणवत्तापूर्ण सब्जियां नहीं उगाई जा सकती हैं।

पारिक ने ऑर्गेनिक खेती की शुरूआत वर्ष 1970 से करना शुरू की। सबसे पहले उन्होंने गोभी की पैदावार से शुरूआत की। शुरू–शुरू में इनकी पैदा की गोभी का वजन लगभग आधा किलो से पौन किलो तक होता था। रासायनिक खाद या कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया बल्कि सिर्फ गोबर से बनी हुई जैविक खाद का प्रयोग किया।

गोभी उत्पादन में लिम्का रिकॉर्ड

पारिक के खेत में 15 किलो वजनी गोभी का फूल, 12 किलो वजनी पत्ता गोभी, 86 किलो वजनी कद्दू, 6 फुट लंबी घीया, 7 फुट लंबी तोरई, 1 मीटर लंबा तथा 2 इंच मोटा बैंगन, 3 किलो से 5 किलो तक गोल बैंगन, 250 ग्राम का प्याज, साढ़े तीन फीट लंबी गाजर और एक पेड़ से 150 मिर्ची तक का उत्पादन हो चुका है। सबसे अधिक किस्में फूलगोभी में हैं तथा इन्होंने अभी तक 8 किलो से लेकर 25 किलो 150 ग्राम तक की फूलगोभी का उत्पादन कर लिया है।

जगदीश पारिक ने स्वयं द्वारा निर्मित अजीतगढ़ सलेक्सन बीज से पैदा गोभी पूर्व राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा, डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम, श्री प्रणव मुखर्जी तथा तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित पूर्व राज्यपाल श्रीमति मॉगरेट अल्वा आदि को भेंट की हैं।

अपने निरंतर प्रयोग तथा कार्यों के प्रोत्साहन स्वरूप इन्हें वर्ष 2000 में श्रृष्टि सम्मान तथा वर्ष 2001 में फर्स्ट नेशनल ग्रास रूट इनोवेशन अवॉर्ड मिल चुका है।

वर्ष 2001 में ही 11 किलो की गोभी उत्पादन के लिए इनका नाम लिम्का बुक में दर्ज हो चुका है। पारिक अब तक छह बार राष्ट्रपति भवन के कार्यक्रमों में शिरकत कर चुके हैं तथा सबसे वजनी गोभी के फूल के विश्व रिकॉर्ड में दूसरे पायदान पर हैं।

जगदीश पारिक विश्व रिकॉर्ड को तोड़ने के लिए जैविक खेती से 25 किलों 150 ग्राम वजनी गोभी का एक फूल उत्पादित कर चुके हैं परन्तु इनकी गोभी का फूल साढ़े आठ सौ ग्राम वनज से पिछड़ा हुआ है। वर्तमान में गोभी के फूल का विश्व रिकॉर्ड 26 किलो वजन के साथ अमेरिका के नाम है।

जगदीश पारिक की इन उपलब्धियों को लेकर उन्हें इस बार भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से सम्मानित करने का फैसला किया है।

o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o

श्री भारत भूषण त्यागी

खेत उगलेंगे सोना, अगर किसान मान लें पद्मश्री भारत भूषण की ये 5 बातें;

अगर आप 100 किसानों से बात करेंगे तो कम से कम 90 कहेंगे कि खेती घाटे का सौदा है। लागत ज्यादा और मुनाफा कम है। जो पैदा होता है उसकी सही खरीदार और मूल्य नहीं मिलता, लेकिन एक शख्स हैं जो कहते हैं खेती सोना उगलती थी और उगलती है, लेकिन आपको उसके लिए कुछ चीजें समझनी होंगी।

'खेती, खासकर जैविक तरीके से कमाई के लिए किसानों को पांच चीजें समझनी होंगी। 1–उत्पादन, 2–प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग), 3–प्रमाणीकरण (सर्टीफिकेशन), 4–बाजार (मॉर्केट) इन चार चीजों के अलावा पांचवां और सबसे अहम कारक है जिसे समझना जरूरी है वो है प्रकृति का साथ।' किसान और किसान प्रशिक्षक भारत भूषण त्यागी कहते हैं।

भारत भूषण त्यागी वही शख्स हैं, जिन्हें पिछले वर्ष भारत में हुए विश्व जैविक कृषि कुंभ में धरतीपुत्र सम्मान से नवाज़ा गया था। 2018 में उन्हें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपी दिवस पर सम्मानित किया था। प्राकृतिक तौर तरीकों से जैविक खेती को लेकर किसानों को प्रशिक्षित करने वाले भारत भूषण त्यागी का दावा है, 'मिश्रित और सहफसली खेती करके साल में एक एकड़ से 3 से 4 लाख रूपए कमाते हैं।' यानि एक औसत किसान से 4 गुणा ज्यादा कमाई। देशा का एक आम किसान सालभर में एक एकड़ जमीन से मुश्किल से 50 हजार से एक लाख रूपए ही कमा पाता है।

कमाई में इतना अंतर कैसे ? ये पूछने पर भारत भूषण अपनी 40 वर्षों की खेती की साधना (किसानी) का फलसफा बताते हैं, '1974 में दिल्ली यूनिवर्सिटी से गणित, भौतिक और रसायन विज्ञान में बीएससी करने के बाद मैं गांव लौट आया। और उस दौर में बताए जा रहे तरीकों (उर्वरक और कीटनाशक) के साथ खेती करने लगा लेकिन उसके प्रतिकूल असर जल्द दिखने लगे। कुछ दिनों में लागत ज्यादा और मुनाफा कम होने लगा था।'

थोड़ा ठहर कर वो बताते हैं, इसके बाद मैंने कृषि वैज्ञानिकों, जानकारों से मिलना और खेती को समझना शुरू किया, वो जैविक खेती के लौटने का दौर था, जल्द मैंने भी समझ लिया कि सेहत, खेत, पर्यावरण के लिए जैविक खेती करनी होगी। इसके बाद मैं 30 वर्षों से वही कर रहा हूं। एक साथ कई–कई फसलें मौसम के अनुसार लेता हूं। उर्वरक कीटनाशक आखिरी बार कब खरीदा था याद नहीं।'

दिल्ली से करीब 100 किलोमीटर दूर उत्तर–प्रदेश के बुलंदशहर के बीटा गांव में रहने वाले भारत भूषण त्यागी के पास करीब 50 बीघे यानी 12 एकड़ जमीन है। मौजूदा समय में उनके खेत में अनाज, सब्जी, फल, टिंबर की लकड़ी वाले पौधे, समेत कई 20–25 तरीके की फसलें हैं। ऐसा साल के लगभग हर महीने में होता है वो एक ही खेत में कई–कई फसलों एक साथ लेते हैं। पिछले कुछ वर्षों से किसानों को अपने फार्म हाउस (जिसे वो घर कहते हैं) पर प्रशिक्षण भी देते हैं। एक अनुमान के मुताबिक वो हर महीने 500 से 1000 किसानों को मुफ्त खेती का फलसफा समझाने की कोशिश करते हैं।

अपनी खेती पर आप किसानों को सिखाते क्या हैं.....? इस सवाल के जवाब में उनका जवाब कुछ इस तरह होता है। 'किसान बहुत होशियार है, उसे कुछ खेती का तरीका बताने की जरूरत नहीं। जरूरत है तो उसकी समझ विकसित करने की। क्योंकि खेती प्रकृति का दिया उपहार है, इसलिए उसे प्रकृति की उत्पादन व्यवस्था समझना है। प्रकृति में एक साथ कई चीजें एक साथ पैदा होने का नियम है। हम कहीं गेहूं ही गेहूं तो कहीं गन्ना ही गन्ना उगाते हैं। प्रकृति में कीड़े पैदा होने का नियम है तो हम उन्हें मारते क्यों हैं, प्रकृति में खरपतवार होना तय है तो हम उसे नष्ट क्यों करते हैं।'

प्रकृति मौसम के साथ चीजें उगाने की इजाजत देती है लेकिन हम बेमौसम चीजें उगाना चाहते हैं, इसलिए कीड़े ज्यादा लगते हैं, खरपतवार होता है। यानि हम प्रकृति का विरोध कर खेती करना चाहते हैं, ये मनुष्य और प्रकृति के बीच युद्ध जैसा है, जितनी जल्दी इसे बंद कर देंगे, खेती कमाई देने लगेगी।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वो इसका उपाय भी बताते हैं। वो खेती के अध्ययन और अभ्यास दोनों को अलग–अलग नजरिए से देखने की वकालत करते हैं।

भारत भूषण बताते हैं, अध्ययन का मतलब प्रकृति की उत्पादन व्यवस्था से और अभ्यास का मतलब जलवायु, मौसम, खेती और आबोहवा को देखते हुए खेती करना है। इंजीनियर छोटा सा पुल बनाते हैं तो उसका पूरा खाका तैयार करते हैं, फिर हम किसान क्यों नहीं जमीन, बीज, उत्पादन और मॉर्केट का पूरा ब्यौरा रखें।

खासकर जैविक खेती के मामले में किसान को चाहिए पूरी डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) बनाए। ये सही मायने में शोध जैसा कार्य है इसलिए हमें खेती का पूरा लेखा–जोखा रखना चाहिए। किसान को पता होना चाहिए कि खेत में क्या पैदा होने वाला है और जो पैदा होगा वो बेचा कहां जाएगा।

किसान को खेती का तरीका बताते हुए वो उसे अपने खेत को तीन जोन में बांटने की सलाह देते हैं। खेत के मेढ़ से लगे चारों ओर के हिस्से को बफर जोन बनाना चाहिए। ये करीब 2 मीटर का होता है। बाउंड्री से सटे इस हिस्से में वो फसले उगानी चाहिए जो कवच का काम करे। जैसे पशुओं, हवा और बाढ़ के पानी को कुछ हद तक रोककर अंदर की फसलों की रक्षा करें।

इस बफर जोन में जैसे लेमनग्रास, पामारोजा, खस जैसे पौधे लगाने चाहिए। इस दो मीटर के बाद मोटी मेढ़ के आसपास किसान को बकाइन और केले के पौधे लगाने चाहिए। जो किसान और जागरूक हैं वो इसके आसपास सतावर और सर्पगंधा जैसी औषधीय फसलें उगा सकते हैं। जबकि इसके अंदर की जमीन पर प्याज और लहसुन जैसी मौसमी फसलें लेनी चाहिए।

इसके बाद बची जमीन के हिस्से में 6 मीटर और तीन मीटर की क्यारियां काटनी हैं 6 मीटर का वो एरिया है, जिसमें साल में दो फसलें लेनी हैं। जबकि तीन मीटर वाला वो हिस्सा है जहां एक वर्ष से ज्यादा चलने वाली फसलें (जैसे गन्ना और बागवानी) लेनी हैं। ये प्रक्रिया पूरे खेत में होनी चाहिए। फसल चक्र और मिश्रित फसलों के चलते कुछ वर्षों में उर्वरकों की नहीं रह जाएगी।

भारत भूषण त्यागी आगे बताते हैं, देश में एक बड़ा वर्ग है जो अपनी सेहत के लिए अच्छी चीजें खाना चाहता है। जब आब सही तरीके से सरलता के साथ खेती करेंगे तो उपभोक्ता खुद आप तक पहुंच जाएंगे। मुझे अपने प्रोडक्ट बेचने में कभी कोई दिक्कत नहीं हुई। मैं

कुछ भी ज्यादा नहीं उगाता, अपने जरूरत की चीज उगाता हूं, सब्जियां फल रोज पैसे देती हैं तो कुछ फसलें महीने तो बागवानी और टिंबर के पौधे साल में एक–2 साल में पैसे देती हैं, लेकिन वो सामान्य फसलों के मुकाबले कई गुना ज्यादा होता है।

वो अपने खेत में किसानों को 2–3 दिन की ट्रेनिंग भी देते हैं। हालांकि देश में प्रचलित खेती के तरीकों और उन्हें बताने वालों पर भी वो सवाल उठाते हैं। 'मैं एक किसान होने के नाते कहूंगा कि ये इस देश का दुर्भाग्य है कि जैसे हम धर्म के नाम पर हम कई पंथों में बंटे हैं, वैसे ही खेती में भी। कंपनियां कहती हैं, फर्टीलाइजर डालो, कोई कहता है गोमूत्र, कोई कहता है सिर्फ गोबर डालो। या किसान की समझ काम करेगी।

उनके मुताबिक खेती की ये तकनीकी कम पानी में कारगर है। इससे सिंचाई तो कम लगती ही है, जलवायु परिवर्तन (क्लाईमेट चेंज) का भी असर कम होता है।

o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o

श्री रामसरन वर्मा

हीरा मोती उपजाकर पद्मश्री बने रामसरन। पुरस्कार से अभिभूत होकर बोले, यह सम्मान देश और प्रदेश के किसानों का

हरख ब्लॉक के छोटे से गांव दौलतपुर (उत्तर–प्रदेश) के निवासी प्रगतिशील किसान रामसरन वर्मा ने अपने खेतों में केला, टमाटर, आलू, मेंथा के रूप में सोना उपजाने का काम किया।

यह कहना इसलिए अतिश्याक्ति न होगा क्योंकि इसी की बदौलत आज उन्हें सरकार ने 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। रामसरन ने 'जागरण' से कहा कि यह सम्मान देश व प्रदेश के किसानों का है। रामसरन दैनिक जागरण अखबार के प्रति आभार प्रकट करना भी नहीं भूले।

अन्य जिलों में रामसरन के फालोअरः रामसरन ने फसल चक्र अपनाकर कम लागत में अधिक उत्पादन का तरीका खोजा। सहारा विधि से टमाटर की इनकी खेती दौलतपुर गांव के साथ ही आसपास के गांवों के किसानों के लिएं वरदान बन गई। टमाटर के साथ ही केला, मेंथा व आलू की खेती में रामसरन ने कई कांति लाने का काम किया।

इनके फार्म हाउस पर तत्कालीन राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी व मौजूदा राज्यपाल श्री राम नाईक दो बार जा चुके हैं। देश के अलावा विदेशों के भी कशषि वैज्ञानिक व विशेषज्ञ तथा देश में आइएएस, पीपीएस का प्रशिक्षण लेने वाले भी इनकी उन्नत खेती को देखने के लिए

RNI No. 831/1957
पोस्टल रजि० DL (S)-01/3092/2018-20
पहले भुगतान किये बिना पोस्ट करने का लाइसेंस नं०
U(C)-92/2018-20

प्रकाशन की तिथि : 1 जून, 2019
नई दिल्ली पी.एस.ओ, नई दिल्ली–1,
तारीख 4 एवं 5, जून 2019

आते हैं। रामसरन की तकनीक से खेती करने वाले जिले के किसान के अलावा बहराइच, गोंडा, फैजाबाद, लखनऊ, अमेठी, सुल्तानपुर, रायबरेली आदि जिलों में भी हैं।

इनकी वेबसाइट वर्मा एग्री डॉट कॉम पर खेती की तकनीक का हवाला है। करीब एक लाख लोग देश में इनकी वेबसाइट को देखते हैं।

खेती के महानायकः दूरदर्शन ने रामसरन को खेती का महानायक टाइटिल देते हुए दो वर्ष पहले इनकी खेती पर आधारित एक टेलीफिल्म भी बनाई थी जो किसानों को प्रेरणा देती है।

कलाम ने किया था सलामः देश के पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम वर्ष 2012 में जिले में आए थे। के.डी. सिंह बाबू स्टेडियम में रामसरन की खेती की प्रदर्शनी देखकर उन्होंने इन्हें सराहा था। मिसाइलमैन ने रामसरन के कृषि उपकरणों को हाथ में लेकर देखा था और किसान भगवान कहकर उन्हें सलाम किया था।

ग्रामीणों का पलायन रोकाः रामसरन वर्मा ने उन्नत खेती के जरिए अपने व आसपास के गांवों के किसानों व खेतीहर मजदूरों का पलायन भी रोका। कुर्सी व सफदरजंग क्षेत्र में करीब तीन सौ बीघे केले की खेती रामसरन वर्मा सहकारिता विधि से करा रहे हैं। रोज करीब 50 मजदूरों को रोजगार मिलता है।

मेहनत बनी गौरवः रामसरन वर्मा को पद्मश्री सम्मान मिलने पर जिलाधिकारी श्री उदयभानु त्रिपाठी ने बधाई दी।

जागरण ने बढ़ाया मनोबलः रामसरन वर्मा का कहना है कि वर्ष 2006 में दैनिक जागरण ने 'रामसरन के खेत सचमुच उगलते हैं हीरा–मोती' शीर्षक से खबर प्रकाशित की थी। इस खबर के बाद इतना मनोबल बढ़ा कि खेती को जीवन का आधार बना लिया।

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

भारत कृषक समाज ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली– 110013, फोनः 011–24359509, 9667673186, ई–मेलः ho@bks.org.in, वैबसाईटः www.farmersforum.in के लिए श्री उरविन्द्र सिंह भाटिया द्वारा सम्पादित, मुद्रित व प्रकाशित तथा एवरेस्ट प्रेस, ई 49/8 ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस –2, नई दिल्ली –110020 द्वारा मुद्रित।